AZAD MPPSC ACADEMY

Unit Of Azad Group

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

Azad Group
empowering nation...

मध्यप्रदेश का इतिहास

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

इतिहास का विभाजन

प्रागैतिहासिक काल ।

लेखक कला का विकास अथवा साक्ष्य नहीं

आद्य ऐतिहासिक काल।

लेखक कला का विकास लेकिन इसे पढ़ा नहीं जा सका।

ऐतिहासिक काल।

लेखक कला का विकास अथवा साक्ष्य नही।

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

इतिहास का विभाजन

प्रागैतिहासिक काल ।

लेखक कला का विकास अथवा साक्ष्य नहीं

आद्य ऐतिहासिक काल।

लेखक कला का विकास लेकिन इसे पढ़ा नहीं जा सका।

ऐतिहासिक काल।

लेखक कला का विकास अथवा साक्ष्य नही।

मध्यप्रदेश का इतिहास

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

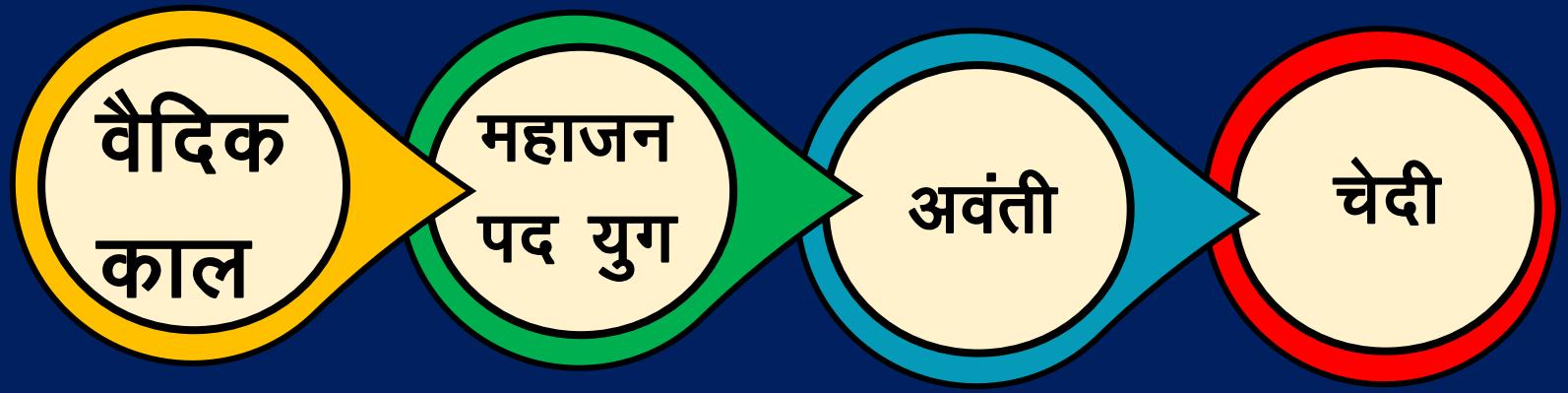

नंद वंश → मौर्य शुंग → सातवाहन → कुषाण → शक वंश → नगवंश → बोधित राजवंश → गुप्त काल → राष्ट्रकूट वंश → परिव्राजक राजवंश → ओलीकर वंश या दशपुर वंश → हूंग आक्रमण → वाकाटक वंश → प्रतिहार वंश → चंदेल वंश → परमाण वंश → भोज वंश → कलचुरी वंश

प्रागैतिहासिक काल

पाषाण काल

1. पुरापाषाण काल

1. मानव :– आखेटक संग्राहक
2. आग का आविष्कार

2. मध्य पाषाण

3. नवपाषाण काल

1. पहिए का आविष्कार
2. कृषि का आविष्कार
3. स्थाई निवास
4. पशुपालन (कुत्ता प्रथम पालतू जानवर)

पाषाण काल

- होमोसैपियन का प्रवेश करीब तीस या चालीस हजार साल पहले इस धरती पर हुआ था।

साक्ष्य

- नर्मदा नदी घाटी
- सोन नदी घाटी
- बेतवा नदी घाटी
- सोनार नदी घाटी

पाषाण काल

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

महत्वपूर्ण स्थान

- भीमबेटका – रायसेन – शैल चित्र
- हथनोरा – सीहोर – मानव खोपड़ी
- महादेव पिपरिया – होशंगाबाद – 860 औजार
- भूतरा – नरसिंहपुर – पाषाण कालीन उपकरण

मध्य पाषाण काल

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

साक्ष्य

- आदमगढ़ होशंगाबाद :– लघु पाषाण उपकरण मानव
  पशुपालक के प्रथम साक्ष्य :– (मानव के साथ दफन कुत्ता)
  खोजकर्ता :– वी. जोशी
- रतलाम, इंदौर, उज्जैन, खंडवा, रीवा, सागर, जबलपुर, होशंगाबाद, धार में मध्य पाषाण कालीन औजार।
- 1867 में विंध्य क्षेत्र में लघु पाषाण उपकरण प्राप्त हुए
- खोजकर्ता :– सी. एल. कार्लाइल

नवपाषाण काल

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

साक्ष्य

1. आदमगढ़
2. दमोह
3. सागर
4. भेड़ाघाट (जबलपुर)
   नवपाषाण कालीन बस्ती के अवशेष
5. रीवा:– चचाई में नवपाषाण कालीन उपकरण
6. भोपाल:– हथियार

ताम्रपाषाण काल

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

- मध्यप्रदेश में बालाघाट एवं जबलपुर जिले के कुछ भागों में ताम्र कालीन औजार मिल है।
- यह मोहनजोदड़ों ओर हड़प्पाा के समकालीन थे
- नर्मदा, मंबल, बेतवा नदी के किनारे और जबलपुर बालाघाट के इस सभ्यता का विकास हुआ
- मलवा के कायथा, एरण, आवरा, नवदाटोली, डॉगवाला व बैसनगर आदि से इस सभ्यता के प्रमाण मिल हैं।
- **डॉ विष्णु श्रीधर वाकणकर** ने भीमबेटका, नागदा, कायथा की खोज की थी।

ताम्र पाषाण काल के प्रमुख प्रागैतिहासिक स्थल

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

कायथा

यह पहली ताम्रपाषाण बस्ती थी जिसका अस्तित्व 1380 से पूर्व तक रहा। कायथा बराह मिहिर की जन्मभूमि थी ।

एरण

यह सागर जिले में स्थित है । इसका प्राचीननाम ऐरिकिण था । इस ताम्र वस्थी का स मय 2000 ई. पूर्व से 700 ई.पूर्व माना जाता है जहां से तांबे की कुल्हाड़िया, सोने के गोल टुकड़े चित्र मृदभांड ताम्र कालीन बस्ती के प्रमाण आदि प्राप्त हुए ।

- **नवदाटोली :–** यह महेश्वर में नर्मदा तट पर स्थित है। इसका ताम्रपाषाण एक अस्तित्व 1637 ई. पूर्व के मध्य माना जाता है यहां से झोपड़ीनुमा मिट्टी के घरों के साक्ष्य मिले हैं जो चौकोर या आयताकार होते थे।
- **आवरा :–** मदंसौर जिलें में स्थित आगरा ग्राम से ताम्रपाषाण से लेकर गुप्त काल त की विभिन्न अवस्थाएं एवं संबधित सामग्री मिली है।
- **डांगवाला :–** यह उज्जैन से 32 किलोमीटर दूर बस्ती में स्थित है यह गत शताब्दी के उत्खनन से अस्तित्व

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

- **नागदा :–** यह उज्जैन जिले में चंबल नदी के तट पर है इस ताम्रपाषाण बस्ती से भी मृदभांड और लघु पाषण के अस्त्र आदि मिले है
- **खेड़ीनामा :–** यह होशंगाबाद जिले में स्थित है। यह 1500 पूर्व पुरानी ताम्रपाषाण बस्ती है।

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

मध्य प्रदेश की महत्वपूर्ण पेंटिंग्स

Rock paintings	Place of origin
लिखी छाज शैलश्रय	करसा, मुरैना
लिखी दंत शैलचित्र	चंदेरी, अशोकनगर
दांता शैलचित्र	बिजावर, छतरपुर
चुरनागुंडी शैलीचित्र	कानती, होशंगाबाद
निशानगढ़ काजरी शैलचित्र	पचमढ़ी
वेलखंदार शैलचिचत्र	पचमढ़ी, होशंगाबाद
झिझारी शैलाश्रय	कटनी
रानी माची शैलाश्रय	चितरंगी, सिंगरौली

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

Online/ Offline Batch

AZAD IAS ACADEMY

IAS,UPPCS, RO/ARO, BPSC, UKPSC, CGPSC, MPPSC, RPSC, JPSC Exam की आसान भाषा में सम्पूर्ण तैयारी के लिए Azad IAS Academy App Download कीजिए

www.azadiasacademy.com

M.9115269789

Our Publication

Azad Publication

अब आप सभी घर बैठे ही IAS,UPPSC,BPSC, MPPSC, RAS,CGPSC,UKPSC,JPSC,UPSSSC Exam एवं सभी प्रतियोगी परीक्षाओं की बुक आर्डर कर सकते है, समग्र भारत में पुस्तकों की Delivery उपलब्ध है,

www.azadpublication.com

M.8929821970

Our Foundation

Azad Publication, Azad Group का Charitable Trust है जिसका मुख्य लक्ष्य राष्ट्र की सामाजिक समस्याओं के निदान के निदान हेतु प्रखर रूप से कार्य करना हेतू हैं एवं पर्यावरण संरक्षण, पशु सेवा, आपदा रहित, शिक्षा, स्वास्थएवं विभिन्न जन समस्याओं का जन जागरूकता के माध्यम से राष्ट से में अग्रणी भूमिका निभागी हैं।

www.azadfoundation.net

Unitofazadgroup@gmail.com

नवपाषाण काल

- वस्तुतः ऋग्वैदिक काल 1500 – 1000 ई.पूर्व में आर्य संस्कृति उत्तर तक सीमित है और उत्तर वैदिक काल (100–600 ई. पू.) समय में ही उसके विंध्याचल को पार कर मध्यप्रदेश मं कदम रखा।
- मनु के 10 पुत्रों मं से एक करूष न कारूस वंश की स्थापना बघेलखंड में की।
- चंद्रवंश – मनु की पुत्री का विवाह सोम से हुआ और इस वंश की स्थापना हुई

वैदिक काल

- सोम का शासन बंदुलखंड में था।
- आयु के पुत्र यदि यथार्थ हुए जिसने अपना साम्राज्य पांच पुत्रों में बांट दिया।
- इनमें से बधु को चर्मवण्ती (चंबल) वेत्रवती (बेतवा) नदी घाटी क्षेत्र मिला जहा यदु के नाम पर यादव वंश स्थापित हुआ।

इक्ष्वाकु वंश

- मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के नाम पर इस वंश की स्थापना हुई जिसका शासन दडकारण्य रहा है
- इस वंश के प्रतापी राजा माधाता ने अपने पुत्र पुरूकुत्स को मध्य भारत के नाग राजाओं की सहायता हेतु भेजा (गधर्व के विरूद्ध)
- इसी वंश के मुचकुद ने रिक्ष ओर परिपात्र पर्वत मालाओं के बीच नर्मदा तट पर अपने पूर्वज नरेश माधाता के नमा पर मांधाता नगरी (ओंकारेश्वर –मांधाता) बसाई।

पौराणिक काल

- रामायण काल में प्राचीन मध्य प्रदेश के अतर्गत दंडकारण्य के धने वन क्षेत्र, विंध्य सतपुड़ा के अलावा यमुना के कोठे का दक्षिणी भाग ओर गुर्जर प्रदेश के कई क्षेत्र स्थित थे
- यदुवंशी नरेश मधु इस क्षेत्र के सासक थे जो अयोध्या के राजा दशरथ के समकालीन थे जनश्रुतियों के अनुसार राम ने अपने वनवास के कुछ क्षण दंडकाण्रय (छत्तीसगढ़) में बिताये थे।

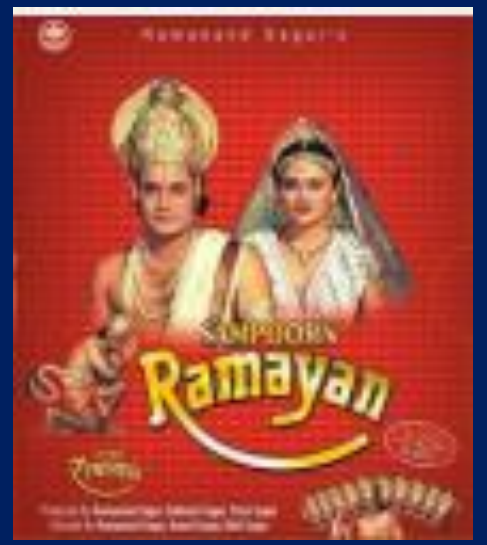

पौराणिक काल

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

- बाल्मीकि आश्रम में माता सीता ने लव कुश को जन्म दिया था यह आश्रम तमसा नदी के तट पर था।
- रामायण कालीन त्रेता युग के बाद महाभारतकालीन द्वापर युग प्रारंभ हुआ।
- महाभारत में माहिष्मती, उज्जैनी, कुतलपुर व विराटपुरी को मध्यप्रदेश के प्रमुख नगर बताया गया है।

पौराणिक काल

- इस युद्ध में वत्स, काशी, चेदि, दशार्ण व मत्स्य जनपदों के राजाओं ने अपनी सेना के साथ पाण्डवों का साथ दिया।
- महिष्मती के नील, अवन्ति के बिन्द, भोज विदर्भ व निषध के राजाओं के कौरवों साथ दिया अवन्ति के दो शासकों बिंदा ओर अनुबिंदा ने कौरवों साथ दिया ।
- महाभारत के अनुसार महिष्मती कानाम महेश्वरपुर था । इसका निर्माण कारूषने करवाया।
- इस युद्ध में पाण्डवों के अज्ञातवास का कुछ समय अवन्ति के वनों में बिताया था।

मध्य प्रदेश के महाजनपद काल

- लगभग 600 ईसा पूर्व पहले प्राचीन समय में भारत में 16 महाजनपद हुआ करते थे।

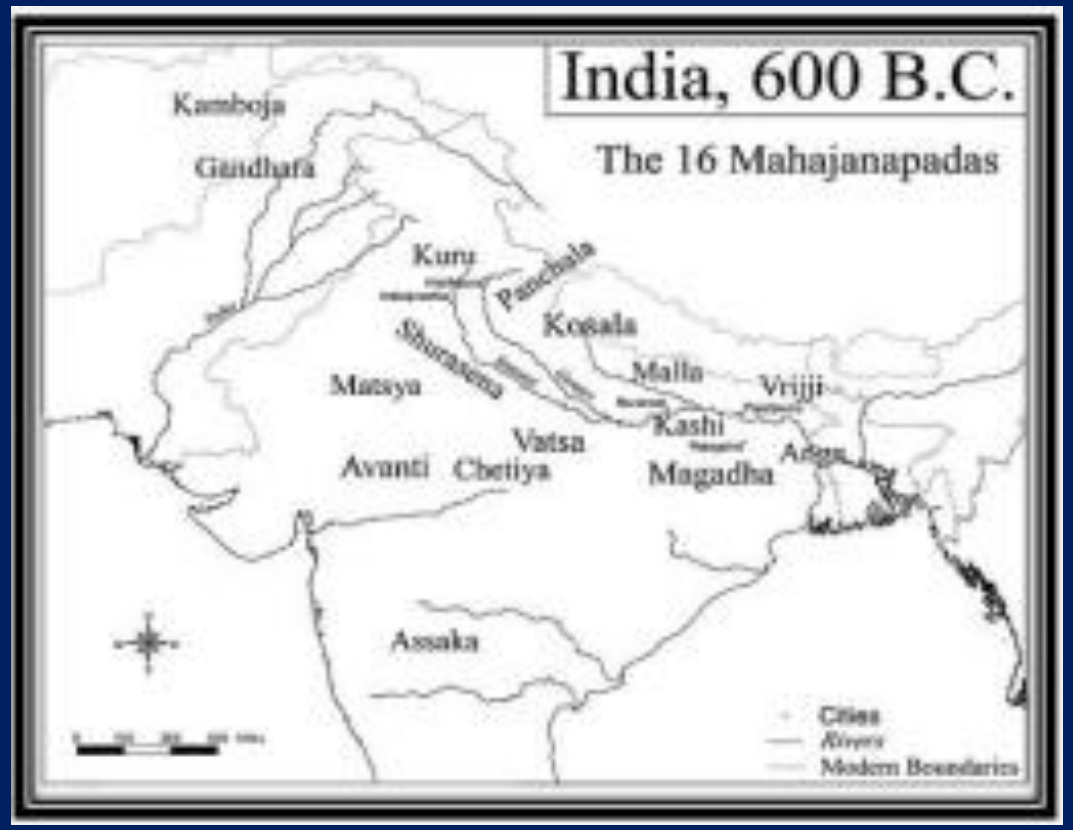

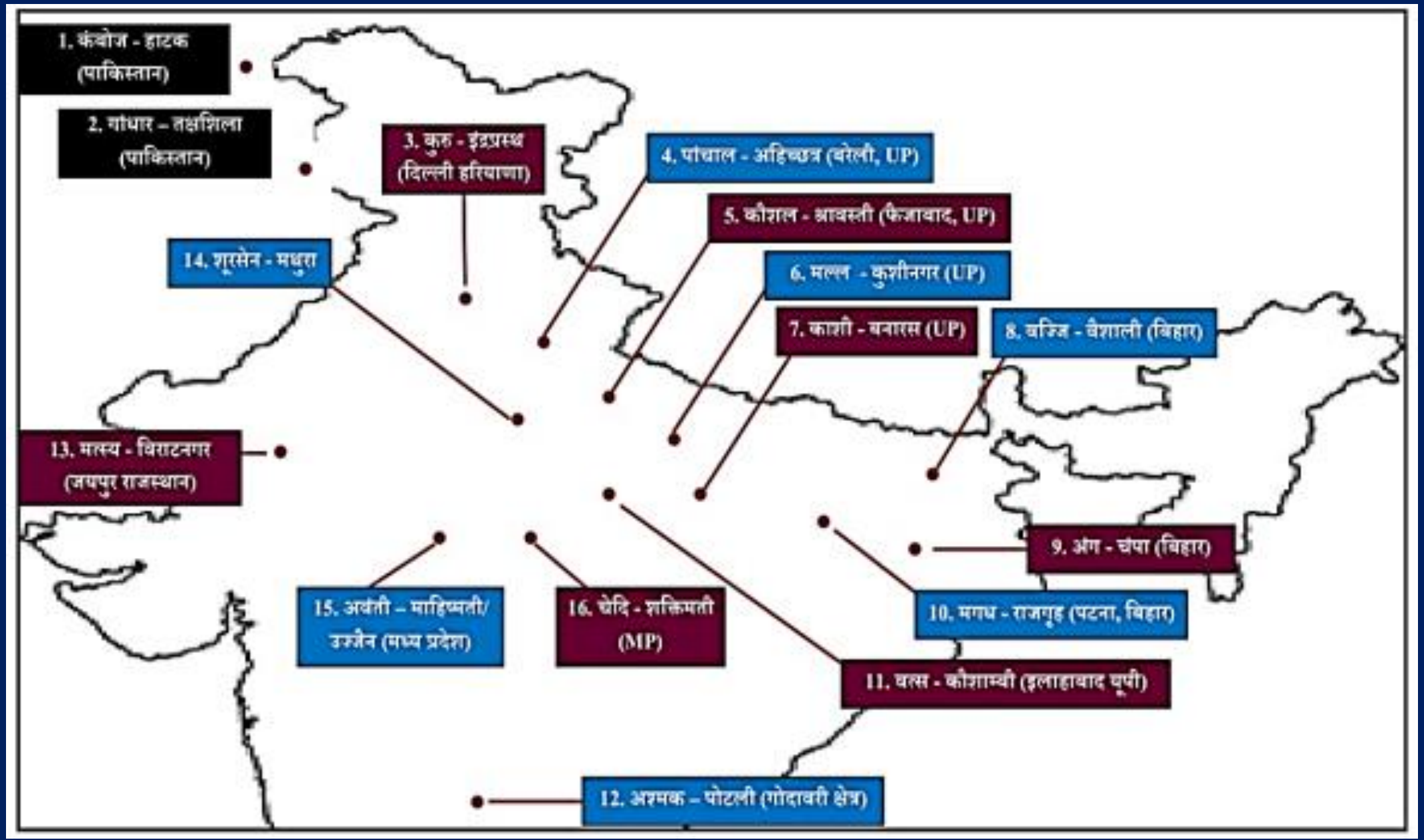

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

महाजनपद

अवंती

- उत्तरी अवंति।
  राजधानी:– उज्जैनी।
- दक्षिणी अवंती ।
  राजधानी :– माहिष्मती

चेदी

राजधानी :– शक्तिमती

अवंती

राजा – चंद प्रद्योत (पिता–पुलिक) →विविसार + प्रद्योत (अच्छे सम्बन्ध) → प्रद्योत–पीलिया राजवैध – जीवक

- प्रद्योत की मृत्यु के बाद उनका पुत्र → पालक राजा बना
- पालक → आक्रमण → कब्जा

↓

वत्स (ग्वालियर)

- अंवती में लोहा अस्त्र–शस्त्र के कारीगर निवास रहे थे

पालक/ →मृत्यु →राजा – अजक नंदी वर्धन

शिशुनाग → अंवती का आक्रमण → अवंती को मगध में मिलया।

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

प्राचीन जनपद के परिवर्तित नाम (नया जनपद) :–

1. अवंती (अवंतिका) – उज्जैन
2. वत्स – ग्वालियर
3. चेदि – खजुराहों
4. अनूप – निमाड़ (खंडवा)
5. दशर्ण – विदिश्ज्ञा
6. तुन्डीकर – दमोह
7. नलपुर – नरवर (शिवपुरी)

नंद वंश

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

संस्थापक :– महापद्मनंद

मध्य प्रदेश की अवंती को पहले शिशुनाग ने नांगवश में मिया मिया था

शिशुनाग → पुत्र → कालाशोक → महापद्म

↓ नंद वंश

मौर्य वंश के संस्थापक ← हत्या – चंद्रगुप्त मौर्यै ← घनानंद

अंतिम शासक :– घनांनंद

मौर्य वंश

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

संस्थापक :– चंद्रगुप्त मौर्य ।

322 ई.पू :– घनानंद को हाराया

अवंती राजा – मित्र–चंद्रगुपत मारैर्य

बिंदुसार

- चंद्रगुप के बाद उनका पुत्र बिंदुसार राजा बना।
- अवंतिका तक्षशिला तथा अन्य प्रांतों के लोगो में विद्रोह

बिंदुसार → अशोक को अवंती भेजा

↓

अशोक विद्रोह का दमन बिना युद्ध के → बिंदुसार द्वारा अवंतिका

अंतिम शासक :– घनांनद

अशोक

- अशोक के उज्जैनी में 11 वर्ष तक शासन किया।
- बिंदुसार के बाद अशोक मौर्य वंश का राजा बना।
- अशोक ने उज्जैनी की राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया।
- अशोक ने देव कुठार उज्जौनी विदिशा के समीप सांची व स सतधारा में विशाल में स्तूप का निर्माण करवाया।

मौर्यकालीन अभिलेख

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

- अशोक के द्वारा बनवाए गए अभिलेखों में से निम्नलिखित का संबंध मध्यप्रदेश से था

अभिलेख का नाम	स्थान
रूपनाथ	जबलपुर
गुर्जर	दतिया
पंगुरारिया	सीहोर
संांची	रायसेन

प्रमुख अभिलेख

- **मौर्यकालीन अभिलेखः—** अशोक के समय में तीन पाषाण लेख रूपनाथ (जबलपुर), गुर्जरा (दतिया) और पान गुराडिया (सीहोर) से मिले है और एक साची में है
- **सातवाहनः—** सातवाहन का अभिलेख मध्यप्रदेश में सांची से प्राप्त हुआ है
- **इंडो ग्रीक अभिलेखः—** विदिशा में अंतियाकोश का राजदूर हेलिओं डोरस के द्वारा बनवाया गया एक गरूढ़ स्तंभ स्थित है।

प्रमुख अभिलेख

- **मौर्यकालीन अभिलेखः–** अशोक के समय में तीन पाषाण लेख रूपनाथ (जबलपुर), गुर्जरा (दतिया) और पान गुराडिया (सीहोर) से मिले है और एक साची में है
- **सातवाहनः–** सातवाहन का अभिलेख मध्यप्रदेश में सांची से प्राप्त हुआ है
- **इंडो ग्रीक अभिलेखः–** विदिशा में अंतियाकोश का राजदूर हेलिओं डोरस के द्वारा बनवाया गया एक गरूढ़ स्तंभ स्थित है।

प्रमुख अभिलेख

- **शक क्षत्रपों का अभिलेख :–**
  - शक क्षत्रपो का मध्यप्रदेश में होने का विवरण प्रदेश में उज्जैन ओर मालवा के नइ स्थानों से मिले सिक्का से स्पष्ट हुआ
- **कुषाण कालीन :–**

मध्यप्रद्रेंश में वासिष्क का सांची से ओद दूसरा जबलपुर से भेड़ाघाट से मिला है

प्रमुख अभिलेख

गुप्त

एरण से मिले अभिलेख से ज्ञात होता है कि समुद्रगुप्त ने अपने विजय अभियान के अंतर्गत एरण पर अधिकार कर लिया था।

- उदयगिरी की पहाड़ियों से प्राप्त चंद्रगुप्त द्वितीय के संधि विग्रहक, वीरसेन का अभिलेख महत्वपूर्ण लिखित साक्ष्य है।
- गुप्त काल का एक अभिलेख सांची से भी प्राप्त हुआ है।

प्रमुख अभिलेख

- कुमारगुप्त का शिलालेख तुमेन (अशोकनगर) से मिला है । जिस पर तुंबवन के शासक घटोत्कच का उल्लेख है।
- उदयगिरी का शिलालेखा कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल का है

➢ **वाकाटक**

- सिवनी , दुड़िया , तिरोड़ी, इदौर, पटट्न ओर बालाघाट से मिले
- वाकाटक प्रवरसेन के ताम्र पात्र संकेत देते है कि उसके रज्य का विस्तार मध्य प्रदेश के कई भागो पर था।

प्रमुख अभिलेख

हुण:—

एरण से मिले तोरमण के शासन के प्रथम वर्ष के बराह प्रतिमा अभिलेख यह पता चलता है कि हूण मध्य भारत में बहुत अंदर तक प्रवेश कर गए थे और सागर पहुच गए थे।

- मिहिरकुल के शासनकाल के 15वें वर्ष का ग्वालियर अभिलेख मध्य प्रेदश में 15वें वर्ष ग्वालियर अभिलेख मध्य प्रदेश में हूण की उपस्थिति को दर्शाता है

प्रमुख अभिलेख

ओलिकार वंश

मदसौर , राजगढ़, मुरैना एवं सीतामऊ से प्राप्त इस वंश के 12 अभिलेखों से यह संकेत मिलता है कि प्रारंमी ओलिकर शासन गुप्तों के सामंत थै

प्रमुख अभिलेख

- मदसौर , अभिलेख यशोधर्मन द्वारा हूण शासक मिहिरकुल का पराजय का विवरण देता है।

➢ **परिवार्जक महाराज:–**

बुदेलखण्ड पर शासन कर रहे परिवार्जक गुप्तों के सामंत थे। इस वंश का पहला अभिलेख खोह से पाया गया है । इस राजाओं के तीन और अभिलेख खोह, जबलपुर और मझगवा से प्राप्त हुए है।

प्रमुख अभिलेख

- **मैकल के पांडूवंशी :–** शहडोल जिले में वर्तमान अमरकंटक के आसपास के क्षेत्र को पुराने समय में मैकल ने नाम से जाना जाता था मेकल पर शासन कर रहे है, पांडूवंशियों की वंशावली ओर कालक्रम का विवरण में बमहनी से प्राप्त भरतवल के राज्यकाल के दूसरे वर्ष के ताम्रपत्र से मिलता है।

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

Online/ Offline Batch

AZAD IAS ACADEMY

IAS,UPPCS, RO/ARO, BPSC, UKPSC, CGPSC, MPPSC, RPSC, JPSC Exam की आसान भाषा में सम्पूर्ण तैयारी के लिए Azad IAS Academy App Download कीजिए

www.azadiasacademy.com

M.9115269789

Our Publication

Azad Publication

अब आप सभी घर बैठे ही IAS,UPPSC,BPSC, MPPSC, RAS,CGPSC,UKPSC,JPSC,UPSSSC Exam एवं सभी प्रतियोगी परीक्षाओं की बुक आर्डर कर सकते है, समग्र भारत में पुस्तकों की Delivery उपलब्ध है,

www.azadpublication.com

M.8929821970

Our Foundation

Azad Publication, Azad Group का Charitable Trust है जिसका मुख्य लक्ष्य राष्ट्र की सामाजिक समस्याओं के निदान के निदान हेतु प्रखर रूप से कार्य करना हेतू हैं एवं पर्यावरण संरक्षण, पशु सेवा, आपदा रहित, शिक्षा, स्वास्थएवं विभिन्न जन समस्याओं का जन जागरूकता के माध्यम से राष्ट से में अग्रणी भूमिका निभागी हैं।

www.azadfoundation.net

Unitofazadgroup@gmail.com

प्रमुख अभिलेख

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

- **वल्लभी के मैत्रक वंश | Maitraka Dynasty of Vallabhi :-** वल्लभी के मैत्रक शासक द्वितीय बालादित्य ने अपने राज्य को पश्चिमी मालवा तक बढ़ा लिया था। और यह मध्यप्रदेश के रतलाम जिले के नोगवां से मिले उसके शासन काल के दो अभिलेखों से प्रमाणित होता है। The Matrak ruler of Valli, Baladitya II, had extended his kingdom to western Malwa. And it is evidenced by two records of his reign from Nogawa in Ratlam district of Madhya Pradesh.

- **शैल वंश | Rock dynasty :-**

आठवीं शताब्दी के दौरान शेल व आधुनिक महाकौशल के पश्चिमी भाग पर शासन कर रहा था। इसकी पुष्टि बालाघाट जिले में राघोली से मिले ताम्र लेख में वर्णित वशावली और कालक्रम से होती है। During the eighth century, was ruling the western part of the shell and modern Mahakaushal. This is confirmed by the rhetoric and chronology described in the copper article from Ragoli in Balaghat district.

शुंग वंश

- संस्थापक :– पुष्पमित्र शुंग
- राजधानी :– विदिशा
- दो अश्वमेघ यज्ञ कराएं

कालीदास → मलविकाग्निमित्रम

↓

अग्नि मित्र

↓

विदिशा का शासक था

पुष्पमित्र शुंग

- सांची स्तूप के तोरण द्वार का निर्माण कराया।
- शुंग शासक भागचद्र के दरबार में यवन राजदूत।

हेलियोडोरस आया

↓

इसने भागवत। धर्म अपनाया।

↓

बेसनगर । (विदिशा में)

↓

भगवान विष्णु को समर्पित

↓

गरूड़ स्तंभ का निर्माण कराया

↓

स्वयं को परम भगवत कहा

- भरहुत स्तूप का पुननिर्माण भी शुंग काल में किया गया ।
- अंतिम सुंग राजा देवभुती था
- वसुदेव कण्व ने देवभूमि की हत्याकर कण्व वंश की सस्थापना की
- इस काल को "आंध्र युग कहा जाता हैं।

सातवाहन वंश

- **संस्थापक :–** सिमुक
- सिमुक ने विदिशा के शासक कण्व को पराजित कर विदिशा पर अधिकार कर लिया।
- प्रतापी शासक – गौतमीपुत्र सातकर्णि था।
- गौतमी बलश्री के → पूना तथा नासिक शिलालेख में

↓

- अनूपदेश निमाड़ ।
- आकार पूर्वी मालवा ।
- अवंती ।

सांची स्तूप :–

- सांची स्तूप के दक्षिणी तोरण द्वार पर शिलालेख में गौतमीपुत्र सातकर्णि का उल्लेख हैं।

सिक्के

- राजा सिरिसात :– उज्जैन, देवास, होशंगाबाद के तेबर (जबलपुर से प्राप्त हुए)
- वशिष्ट पुत्र पुलुमात्रि :– भिलासा एवं देवास
- यग्श्री सातकर्णी :– वेसनगर, तेवर, देवास

Note !

- सर्वप्रथम शीशे के सिक्के चलाए (त्रिपुरी में मिले)
- भूमिदान प्रथा की शुरूआत की ।

सांची स्तूप

- सांची स्तूप के दक्षिणी तोरण द्वार पर शिलालेख में गौतमीपुत्र सातकर्णि का उल्लेख है।

आभीर वंश

खानदेश – बुरहानपुर

सात वाहनों के समय आभीर वंश की स्थापना :– ईश्वर सेन की थी

नासिक शिलालेख के द्वारा इस बात का प्रमाण मिला है।

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

कुषाण वंश

- **संस्थापक :–** कुजुल कडफिसेस

सिक्के :–

- विम कडफिसेस → विदिशा
- वासुदेव → तांबे का सिक्का जबलपुर

अभिलेख :–

कनिष्क का →
- संची अभिलेख
- भेड़ाघाट से दो मूर्ति लेख मिले हैं।

Note !

- सर्वाधिक सिक्के शहडोल से मिले है।

❖ कुषाण वंश का सबसे प्रतापी राजा कनिष्क था (78 ई.)

❖ कनिष्क ने शक संवत चलाया था जो भारत सरकार का सरकारी कैलेंडर है।

हिंद यवन :–

❖ मिनाडर के सिक्के बालाघाट से प्राप्त हुए हैं।

❖ नागसेन ने मिनांडर को बुद्ध धर्म की शिक्षा दी थी।

नागवंश

- **संस्थापक :–** वृषनाथ
- **राजधानी :–** विदिशा

सिक्के :–

➢ वेसनगर – विदिशा

भीम नाग अपनी राजधाी → पद्मावती ले गया (ग्वालियर) पवाया भी कहते हैं

बोधि तथा मघ राजवंश

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

- दूसरी व तीसरी शताब्दी में मध्यप्रदेश के त्रिपुरी क्षेत्र पर (जबलपुर व तेबर) बुधराज वंश का शासन था।
- बोधि वंश के चार शासक थे।

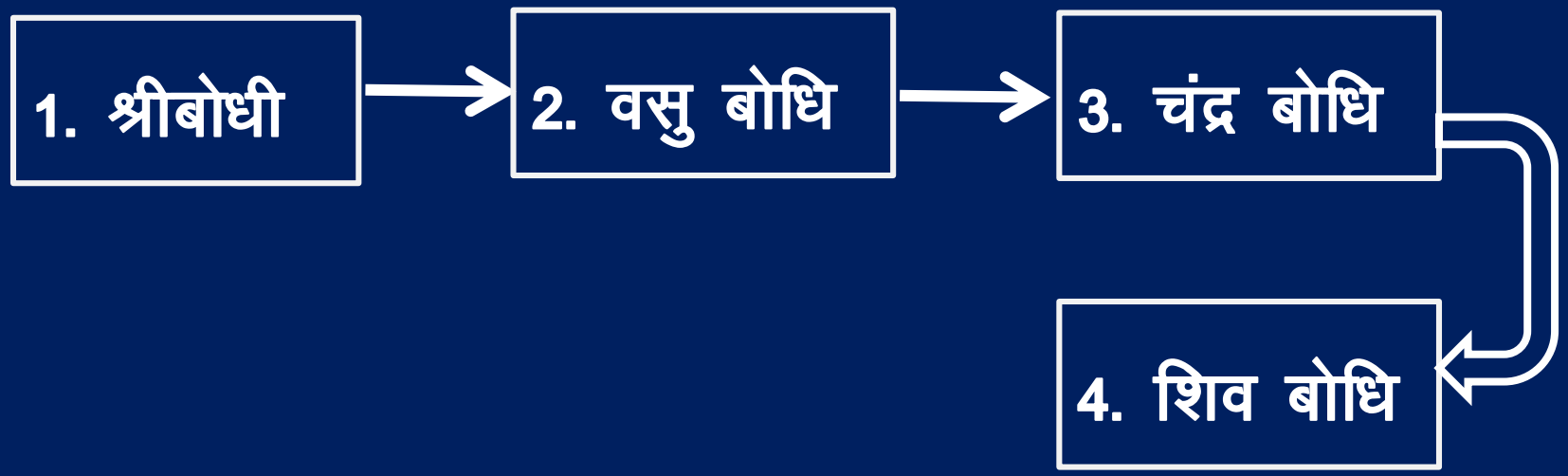

बोधि तथा मघ राजवंश

सिक्के :–

- बोधि वंश के सिक्के – जबलपुर – निजी संग्रहालय

→ • डॉक्टर महेश चंद्र चोबे

उत्खनन → मिट्टी की मुद्रा → महासेन शासक का नाम अंकित

↓

शासन क्षेत्र त्रिपुरी क्षेत्र

मघराज वंश के प्रमुख शासक :–

1. भीमसेन प्रथम
2. भद्र मघ
3. शिव मघ

सिक्के + मोहर + शिलालेख = कौशांबी । भीटा + बांधवगढ़ (शहडोल)

वाकाटक वंश

स्थापना :– विंध्य शक्ति

- वाकाटक नरेश पृथ्वी सिंह द्वितीय के सामंत व्याघ्र देव ने नचना कुठार के मंदिर का निर्माण करवाया।

गुप्त काल

- **संस्थापक** – चंद्रगुप्त प्रथम

- समुद्रगुप्त प्रथम शासक है जिसके सिक्के मध्यप्रदेश में मिले ।
- समुद्रगुप्त → मध्य प्रदेश इतिहास से संबंध जानकारी

↓

इलाहाबाद स्तंभ लेख से

- समुद्रगुप्त ने 2 जनजातियों को हराया ।
  1. खरपरिक
  2. सनकानिक

गुप्त काल

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

- खर्परिक दमोह जिले के बटियागढ़ में पाए गए शिलालेखों के अनुसार खर्प रिको के पूर्वज थे
- एरण सतिप्रथा में प्रथम साक्ष्य
- समुद्रगुप्त भारत का नेपोलियन

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

Online/ Offline Batch

AZAD IAS ACADEMY

IAS,UPPCS, RO/ARO, BPSC, UKPSC, CGPSC, MPPSC, RPSC, JPSC Exam की आसान भाषा में सम्पूर्ण तैयारी के लिए Azad IAS Academy App Download कीजिए

www.azadiasacademy.com

M.9115269789

Our Publication

Azad Publication

अब आप सभी घर बैठे ही IAS,UPPSC,BPSC, MPPSC, RAS,CGPSC,UKPSC,JPSC,UPSSSC Exam एवं सभी प्रतियोगी परीक्षाओं की बुक आर्डर कर सकते है, समग्र भारत में पुस्तकों की Delivery उपलब्ध है,

www.azadpublication.com

M.8929821970

Our Foundation

Azad Publication, Azad Group का Charitable Trust है जिसका मुख्य लक्ष्य राष्ट्र की सामाजिक समस्याओं के निदान के निदान हेतु प्रखर रूप से कार्य करना हेतू हैं एवं पर्यावरण संरक्षण, पशु सेवा, आपदा रहित, शिक्षा, स्वास्थएवं विभिन्न जन समस्याओं का जन जागरूकता के माध्यम से राष्ट से में अग्रणी भूमिका निभागी हैं।

www.azadfoundation.net

Unitofazadgroup@gmail.com

चंद्रगुप्त द्वितीय

- राजधानी – उज्जैन (शक राजा रूप सिंह को मारकर)
- मृच्छकटिकम – विदिशा एवं उज्जैन की जानकारी

↓

लेखक शुद्रक

- फाह्मान चंद्रगुप्त के शासनकाल में भारत आया।

नवरत्न :–

1. कालिदास
2. धनवंतरी
3. वाराह्मीहिर
4. अमर सिंह
5. छपणक
6. शंकु
7. वेतालभट्ट
8. कटकर्पर
9. वरूचि

चंद्रगुप्त द्वितीय

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

नवरत्न :–

1. कालिदास
2. धनवंतरी
3. वाराह्मीहिर
4. अमर सिंह
5. छपणक
6. शंकु
7. वेतालभट्ट
8. कटकर्पर
9. वरूचि

गुप्तकालीन प्रमुख अभिलेख

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

1. मंदसौर अभिलेख

- भाषा :– संस्कृत
- स्थापना :– कुमारगुप्त द्वितीय
- दशपुर सूर्य मंदिर का निर्माण
- सामाजिक सांस्कृतिक व धार्मिक जीवन की जानकारी

2. उदयगिरि अभिलेख

- शंकर नामक व्यक्ति द्वारा पार्थनाथ की मूर्ति स्थापित किए जाने का उल्लेख

गुप्तकालीन प्रमुख अभिलेख

3. सांची अभिलेख

- हरी स्वामिनी आर्य संघ को दान देने का उल्लेख

4. तुमैन अभिलेख

- स्थापक :– स्कंद गुप्त
- स्थान :– अशोक नगर

5. तिगवा सूर्य मंदिर

- स्थान :– जबलपुर
- गर्भ ग्रह में नरसिंह मूर्ति स्थापित है।

गुप्तकालीन प्रमुख अभिलेख

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

6. भूमरा शिव मंदिर

- नागौद (सतना) →

7. खोह का शिव मंदिर

- नागौद (सतना) →

8. बाघ की गुफाएं

- धार ⟶

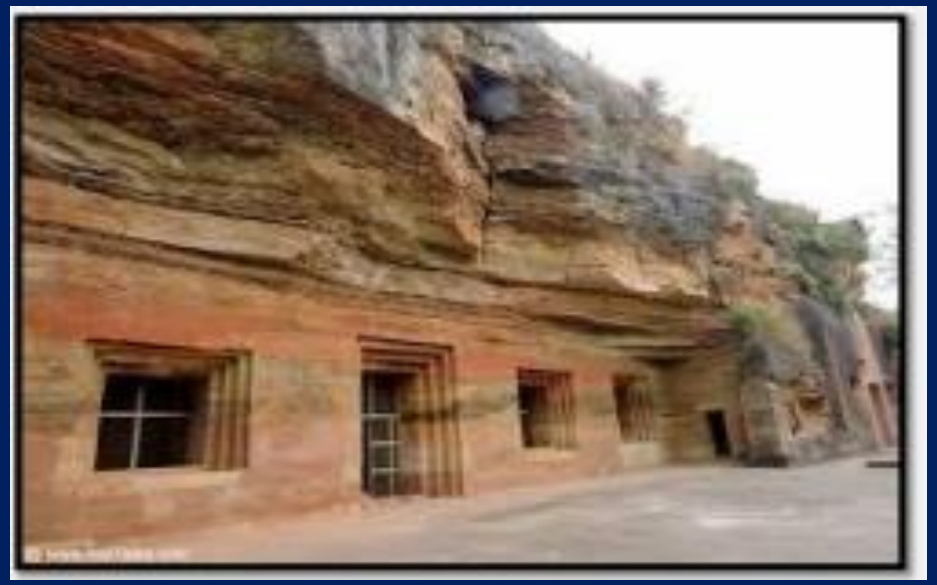

औलिकर वंश

अधिकार क्षेत्र

- मालवा एवं दशपुर (मंदसौर)

प्रथम शासक

- नरवर्मन

530 ई. → आक्रमण → वाकाटक, हूण → स्वतंत्र शासक की घोसणा यशोधर्मन (मालवा)

औलिकर वंश

- हूणों का आक्रमण → • तोरमण व मिहिरकुल (मालवा, सागर, एरण)
- मिहिरकुल **VS** यशोधवर्मन (जीत – यशोधवर्मन)

परिव्राजक और उच्चकल्प वंश

- बघेलखंड खोहग्राह → जानकारी परिव्राजक महाराजा के ताम्रपत्र से

परिव्राजक
बुंदेलखंड अभिलेख

पांडू राजवंश
कालिंजर अभिलेख

मौखरी वंश
असीरगढ़ ताम्र मोहर लेख।

कलचुरी वंश

- महिष्मति शाखा
- त्रिपुरी शाखा

2. त्रिपुरी शाखा

- शासक गांगेयदेव :– उल्लेख (अलबरूनी)
- राजधानी :– त्रिपुरी
- युद्ध गांगेयदेव **vs** राजा भोज परमार वंश (विजय गांगेय देव)
- कलचुरी शासकों में सबसे प्रतापी शासक गंगें देव का पुत्र लक्ष्मी कर्ण या कर्ण देव था।

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

कर्ण देव

- कर्णावती नगर जबलपुर के निकट
- अमरकंटक के मंदिरों का निर्माण
- बनारस में 12 खंड के कर्ण मेरू मंदिर का निर्माण

- मलकापुरम अभिलेख के अनुसार कलचुरी वंश 1240 ईस्वी तक रहा
- अंतिम शासक :– विजय सिंह

पुष्यमित्र शुंग

- सांची स्तूप के तोरण द्वार का निर्माण कराया ।
- शुंग शासक भागभद्र के दरबार में यवन राजदूत → हेलियोडोरस आया
  - इसने भागवत । धर्म अपनाया
  - बेसनगर (विदिशा में)
  - भगवान विष्णु को समर्पित
  - गरूड़ स्तंभ का निर्माण कराया
  - स्वयं को परम भगवत कहा।

- भरहुत स्तूप का पुनर्निर्माण भी शुंग काल में किया गया ।
- अंतिम सुंग राजा **देवभुती** था
- वसुदेव कण्व ने **देवभूमि** की हत्याकर **कण्व वंश** की सस्थापना की
- इस काल को **"आंध्र युग कहा जाता** हैं।

सातवाहन वंश

- **संस्थापक :–** सिमुक
- सिमुक ने विदिशा के शासक कण्व को पराजित कर विदिशा पर अधिकार कर लिया।
- प्रतापी शासक – गौतमीपुत्र सातकर्णि था।
- गौतमी बलश्री के → पूना तथा नासिक शिलालेख में

↓

- अनूपदेश निमाड़ ।
- आकार पूर्वी मालवा ।
- अवंती ।

सांची स्तूप :–

- सांची स्तूप के दक्षिणी तोरण द्वार पर शिलालेख में गौतमीपुत्र सातकर्णि का उल्लेख हैं।

सिक्के

- राजा सिरिसात :– उज्जैन, देवास, होशंगाबाद के तेबर (जबलपुर से प्राप्त हुए)
- वशिष्ट पुत्र पुलुमात्रि :– भिलासा एवं देवास
- यग्श्री सातकर्णी :– वेसनगर, तेवर, देवास

Note !

- सर्वप्रथम शीशे के सिक्के चलाए (त्रिपुरी में मिले)
- भूमिदान प्रथा की शुरूआत की ।

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

Online/ Offline Batch

AZAD IAS ACADEMY

IAS,UPPCS, RO/ARO, BPSC, UKPSC, CGPSC, MPPSC, RPSC, JPSC Exam की आसान भाषा में सम्पूर्ण तैयारी के लिए Azad IAS Academy App Download कीजिए

www.azadiasacademy.com

M.9115269789

Our Publication

Azad Publication

अब आप सभी घर बैठे ही IAS,UPPSC,BPSC, MPPSC, RAS,CGPSC,UKPSC,JPSC,UPSSSC Exam एवं सभी प्रतियोगी परीक्षाओं की बुक आर्डर कर सकते है, समग्र भारत में पुस्तकों की Delivery उपलब्ध है,

www.azadpublication.com

M.8929821970

Our Foundation

Azad Publication, Azad Group का Charitable Trust है जिसका मुख्य लक्ष्य राष्ट्र की सामाजिक समस्याओं के निदान के निदान हेतु प्रखर रूप से कार्य करना हेतू हैं एवं पर्यावरण संरक्षण, पशु सेवा, आपदा रहित, शिक्षा, स्वास्थएवं विभिन्न जन समस्याओं का जन जागरूकता के माध्यम से राष्ट से में अग्रणी भूमिका निभागी हैं।

www.azadfoundation.net

Unitofazadgroup@gmail.com

आभीर वंश

खानदेश – बुरहानपुर

सात वाहनों के समय आभीर वंश की स्थापना :– ईश्वर सेन की थी

नासिक शिलालेख के द्वारा इस बात का प्रमाण मिला है।

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

कुषाण वंश

- **संस्थापक :–** कुजुल कडफिसेस

सिक्के :–

- विम कडफिसेस → विदिशा
- वासुदेव → तांबे का सिक्का जबलपुर

अभिलेख :–

कनिष्क का →
- संची अभिलेख
- भेड़ाघाट से दो मूर्ति लेख मिले हैं।

Note !

- सर्वाधिक सिक्के शहडोल से मिले है।

❖ कुषाण वंश का सबसे प्रतापी राजा कनिष्क था (78 ई.)

❖ कनिष्क ने शक संवत चलाया था जो भारत सरकार का सरकारी कैलेंडर है।

हिंद यवन :–

❖ मिनाडर के सिक्के बालाघाट से प्राप्त हुए हैं।

❖ नागसेन ने मिनांडर को बुद्ध धर्म की शिक्षा दी थी।

नागवंश

- **संस्थापक :–** वृषनाथ
- **राजधानी :–** विदिशा

सिक्के :–

➢ वेसनगर – विदिशा

भीम नाग अपनी राजधाी → पद्मावती ले गया (ग्वालियर) पवाया भी कहते हैं

बोधि तथा मघ राजवंश

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

- दूसरी व तीसरी शताब्दी में मध्यप्रदेश के त्रिपुरी क्षेत्र पर (जबलपुर व तेबर) बुधराज वंश का शासन था।
- बोधि वंश के चार शासक थे।

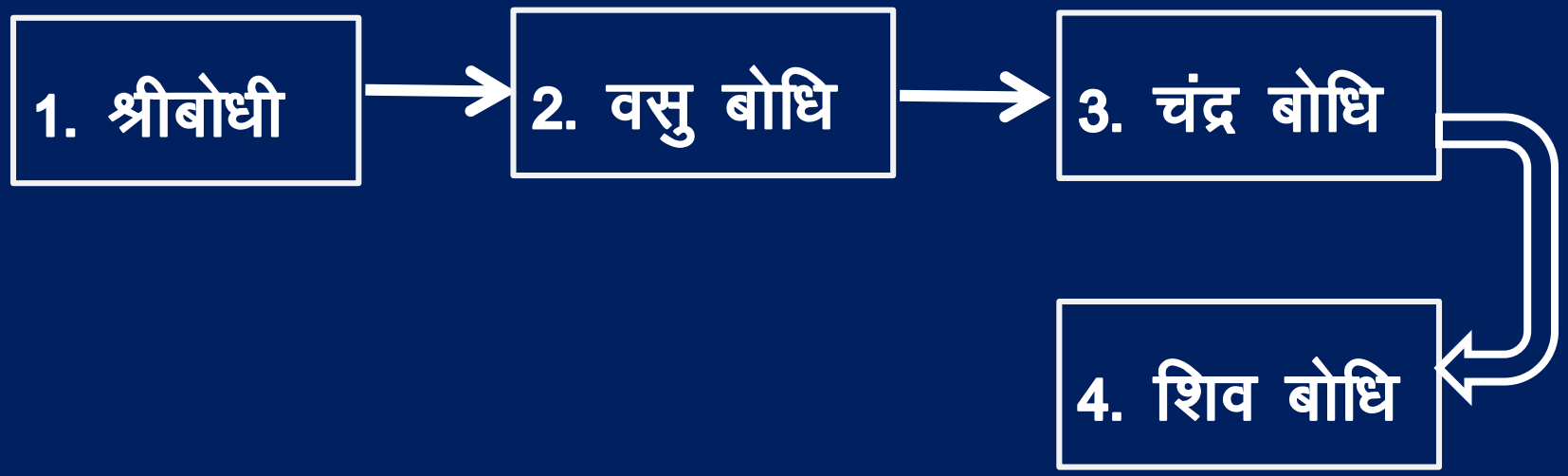

बोधि तथा मघ राजवंश

सिक्के :–

- बोधि वंश के सिक्के – जबलपुर – निजी संग्रहालय

→ • डॉक्टर महेश चंद्र चोबे

उत्खनन → मिट्टी की मुद्रा → महासेन शासक का नाम अंकित

↓

शासन क्षेत्र त्रिपुरी क्षेत्र

मघराज वंश के प्रमुख शासक :–

1. भीमसेन प्रथम
2. भद्र मघ
3. शिव मघ

सिक्के + मोहर + शिलालेख = कौशांबी । भीटा + बांधवगढ़ (शहडोल)

वाकाटक वंश

स्थापना :– विंध्य शक्ति

- वाकाटक नरेश पृथ्वी सिंह द्वितीय के सामंत व्याघ्र देव ने नचना कुठार के मंदिर का निर्माण करवाया।

चंदेल राजवंश

- आरंभ में प्रतिहारों के सामंत
- संस्थापक :– **नन्नुक**

नन्नुक → वाक्यपति → जयशक्ति / जेजक → जयशक्ति → राहिल(कब्जा महोवा) → हर्ष देव → यशोवर्मन → राजा धंग → गंड → विद्याधर → परमर्दी देव

- वाक्यपति: आनंद धाम विंध्य पर्वत
- जयशक्ति / जेजक: प्रदेश–जेजाकभुक्ति (वर्तमान बुंदेलखण्ड)
- यशोवर्मन: शासन हिमालय से मालवा तक तथा कश्मीर सें बंगाल तक जानकारी खजुराहों अभिलेख से
- राजा धंग: सुक्त गीन के खिलाफ जयपाल की सहायता दो श्रेष्ठतम मंदिर – पार्श्वनाथ एवं विश्वनाथ
- गंड: आनंदपाल की सहायता की, चित्रगुप्त मंदिर, जग देवी वेष्णो मंदिर

राष्ट्रकूट वंश

- राष्ट्र वंश सातवीं से दसवीं सदी तक दो शाखा में चाल।

राष्ट्रकूट वंश

बैतूल शाखा

4 शासकों की जानकारी मध्यप्रदेश में

1. दुर्गराज
2. गोविंदराज
3. स्वामिक राज
4. नन्नराज (युधसूर)

क्षेत्रः– बेतूल, अमरावती

मान्यखेत शाखा

1. दंतीदुर्ग
2. कृष्ण प्रथम
3. गोविंद द्वितीय
4. गोविंद तृतीय
5. गोविंद तृतीय
6. अमोघवर्ष

राष्ट्रकूट वंश

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

- अमोघवर्ष के उपरांत उसका पुत्र **कृष्ण द्वितीय** राजा बना। उसके त्रिपुरी के **कलचुरी राजा कोकल्लदेव की पुत्री** से **विवाह** किया था। **कृष्ण द्वितीय** का **संघर्ष कन्नौज के प्रतिहार राजा मिहिरभोज** से हुआ। अमोघवर्ष तृतीय का विवाह त्रिपुरी के कलचुरी नरेश युवराज की पुत्री कुन्दकादेवी से हुआ **कृष्ण तृतीय (939–968 ई)** ने संभवतः **डाहाल प्रदेश पर आक्रमण** कर कलचुरी नरेश **लक्ष्मण राज तृतीय** (945– 970 ई.) को पराजित किया मध्यप्रदेश के इन अभियानों में **राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय और कलचुरी राजाओं के मध्य विवाद के पश्चात दोनों वंशो के मैत्रीपूर्ण संबंध** समाप्त हो गए। अमोघ वर्ष तृतीय के पश्चात कृष्णा (939 –968) सत्तासीन हुआ।
- इस प्रकार राष्ट्रकूट के लगभग 225 वर्षीय गौरवशाली शासन का अंत हुआ

राष्ट्रकूट वंश

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

- इनमें नन्नराज के लिए युद्धशुर नाम का प्रयोग किया गया है
- दंतिदुर्ग के पश्चात कृष्ण प्रथम (758 – 773 ई.) गद्दी पर बैठा प्राचीन मध्य प्रदेश का मराठी भाग उसके अधिकारी में आ गया था । कृष्ण प्रथम के पश्चात् गोविंद द्वितीय (773 – 780 ई)गद्दी पर बैठा।
- गेविंद द्वितीय के बाद ध्रुव (780– 793 ई) गद्दी पर बैठा। उसने उज्जैन के प्रतिहार शासक वत्सराज को झांसी के निकट परास्त किया था
- ध्रुव के पश्चात उसका पुत्र गोविंद तृतीय (793–815ई.) सत्तासीन हुआ मध्यप्रदेश में उसके अनेक दान पत्र प्राप्त हुए हैं भोपाल और झांसी के मध्य बुंदेलखंड में उसका संघर्ष प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय से हुआ था

- इसके पश्चात अमोघवर्ष या शर्व (814 – 878 ई)नामक विद्वान गद्दी पर बैठा।
- अमोघवर्ष में मान्यखेत नगर बसाया।
- डसने स्वयं कविराज मार्ग नामक ग्रंथ लिखा जबलपुर जिले में कारी तलाई से कलचुरी संवत (842 –43 ई) का खंडित शिलालेख प्राप्त हुआ है जिसमें अमोघवर्ष का उल्लेख है।

गुर्जर प्रतिहार वंश

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

❖ मूल निवास – उज्जैनी (अवंती)

- ग्वालियर अभिलेख → • जानकारी → • लक्ष्मण के वंशज का दावा

स्थापना

- मध्य प्रदेश मालवा में :– गुर्जर प्रतिहार वंश
- बंगाल :– पाल वंश का शासन

गुर्जर प्रतिहार वंश के प्रमुख शासक :–

➢नागभट्ट प्रथम ➢ देवराज ➢ वत्सराज ➢ नागभट्ट द्वितीय ➢ मिहिरभोज ➢महेंद्र पाल ➢ देवपाल (अंतिम)

गुर्जर प्रतिहार वंश

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

- मैहर भोज प्रथम गद्दी पर बैठा तो उसने मध्य भारत व राजपूताना में अपनी स्थिति पुनः शुद्रण कर ली एवं मालवा का अधिकार कर लिया

राष्ट्रकूट अभिलेख → जानकारी → युद्ध मिहिरभोज VS कृष्ण तृतीय उज्जैनी में → परिणाम नही

- अतः मालवा पर मिहिरभोज का अधिकार बना रहा
- मिहिरभोज की मृत्यु के पश्चात महिपाल महेंद्र पाल राजा बना
- कन्नौज युद्ध :– ➢ महिपाल इंद्र द्वितीय → ➢ महिपाल पराजित जान बचाने के लिए युद्ध से भाग गया
- इसके शासनकाल में ग्वालियर भी शामिल था

गुर्जर प्रतिहार वंश

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

सुलेमान अरब यात्री → भारत आया → मिहिरभोज → शक्ति व समृद्धि की प्रशंसा

मध्य प्रदेश में मिहिरभोज के तीन अभिलेख प्राप्त हुए हैं :–

- ग्वालियर से दो अभिलेख
- तीसरा अभिलेख ग्वालियर के सागर ताल स्थान से

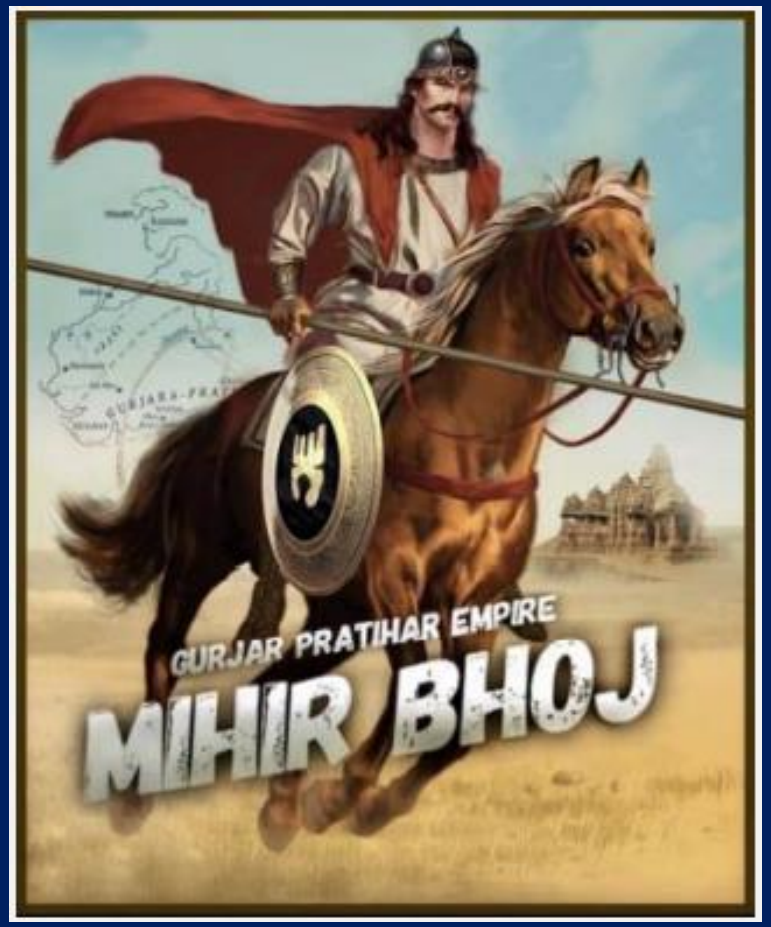

मालवा का परमार वंश

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

- संस्थापक :– कृष्णराज
- बैरीसिंह ने राजधानी उज्जैन से धार स्थापित की
- स्बसे पहले सियाक ने अपने राष्ट्रकूटो की प्रभुता को अस्वीकार और अपने वंश को स्वतंत्र घोषित किया
- सियाक ने हूड राजा योगीराज द्वितीय को पराजित किया
- मृत्यु लगभग 1912 ईस्वी में

  सियाक —उत्तराधिकारी→ राजा मुंज

- केथेम दनापत्र– मूंज ने हुडो को हराया

मालवा का परमार वंश

- हस्थीकुंड अभिलेख मुंज ने मेवाड़ शासक शक्तिकुमार को हराया
- उदयपुर अभिलेख – त्रिपुरी का अधिकार

तेलप द्वितीय चालुक्य वंश

↓

6 बार पराजित किया (सातवीं बार बंदी बनाया गया और मार डाला गया)

➢ मुंड ➢ सिंधुराज ➢ राजा भोज

राजा भोज। 1000 ई. से 1055 ई.।

- परमार वंश के सबसे प्रतापी शासक

राजा भोज → पराजित → गांगेयदेव (त्रिपुरी शासक)

- राजधानी – **धार**
- सरस्वती कंठाभरण की रचना की
- [संस्कृत विद्यालय] [सरस्वती मंदिर] – **धार**
- भोपाल के निकट भोजपुर ग्राम भोपाल में भोज सर झील का निर्माणा करवाया
- चेदी नरेश की सेनाओं द्वारा भोज पराजित हुए तथा बाद में बीमारी से मृत्यु हुई

राजा भोज —पुत्र→ जयसिंह —भाई→ उदयादित्य → लक्ष्मणदेव → यशोवर्मन

उदयादित्य ↓

उदयपुर नीलकंठेश्वर मंदिर का निर्माण

Azad MPPSC Academy
Unit Of Azad Group

Online/ Offline Batch

AZAD IAS ACADEMY

IAS,UPPCS, RO/ARO, BPSC, UKPSC, CGPSC, MPPSC, RPSC, JPSC Exam की आसान भाषा में सम्पूर्ण तैयारी के लिए Azad IAS Academy App Download कीजिए

www.azadiasacademy.com

M.9115269789

Our Publication

Azad Publication

अब आप सभी घर बैठे ही IAS,UPPSC,BPSC, MPPSC, RAS,CGPSC,UKPSC,JPSC,UPSSSC Exam एवं सभी प्रतियोगी परीक्षाओं की बुक आर्डर कर सकते है, समग्र भारत में पुस्तकों की Delivery उपलब्ध है,

www.azadpublication.com

M.8929821970

Our Foundation

Azad Publication, Azad Group का Charitable Trust है जिसका मुख्य लक्ष्य राष्ट्र की सामाजिक समस्याओं के निदान के निदान हेतु प्रखर रूप से कार्य करना हेतू हैं एवं पर्यावरण संरक्षण, पशु सेवा, आपदा रहित, शिक्षा, स्वास्थएवं विभिन्न जन समस्याओं का जन जागरूकता के माध्यम से राष्ट से में अग्रणी भूमिका निभागी हैं।

www.azadfoundation.net

Unitofazadgroup@gmail.com